

काव्यक श्रव्यता एवं दृश्यताक आधारपर दूगोष्ट भेद कहल गेल-
अदि- श्रव्यकाव्य एवं दृश्यकाव्य। दृश्य काव्यक आनन्द सामाजिककें आँखिक
द्वारा प्राप्त होइत छनि तथा श्रव्यकाव्यक आनन्द सामाजिककें कानक
द्वारा प्राप्त होइत छनि। दृश्यकाव्यकें श्रव्यकाव्यक अपेक्षा श्रेष्ठ कहल
गेलैक अदि। कहल गेल अदि- काव्येषु नाटकं रम्यम्। अर्थात्
काव्यमे- नाटक रमणीय होइत अदि। एकर दूगोष्ट कारण होइत अदि-
पहिल ई जे श्रव्यकाव्यसँ मात्र विद्वत्समाजकें आनन्द प्राप्त होइत
छनि परन्तु दृश्यकाव्यसँ नहि केवल विद्वत् समाजकें प्रत्युत
अशिक्षित वर्गक लोकसँ आनन्द प्राप्त होइत छनि। दृश्यकाव्यकें
श्रेष्ठ मानबाक दोसर कारण यिह छी जे श्रव्यकाव्यसँ सामाजिक
मात्र कानकें आनन्द प्राप्त होइत छनि आ दृश्यकाव्यसँ
कानक संग-संग दार्शनिक नेत्रसँ आनन्द प्राप्त होइत छनि।

दृश्यकाव्यक असल नाम यिह 'रूपक'। 'रूपा' रूपानु रूपम्'
अर्थात् रूपक आरोप वा अनुकरण रूपक यिह।

- १) स्वर्गीय पण्डित जीवन का-रुत 'सुन्दरसंयोग' मिथिला-
भाषा साहित्यक महीय-मणिमय हार यिह। मिथिलाभाषा
साहित्य मध्य रहि नाट्यकृतिक महत्वपूर्ण स्थान दैक।
मैथिली साहित्यमे- सुन्दरसंयोगक रचनासँ भुगान्तर उपस्थित
होइत अदि। जेना- महाकाव्यक रचना करबाक दृष्टिसँ मैथिलीक
महाकाव्यमे- मनबोध्य कृत 'कुल्लोगन्मक' विभिन्न महत्व अदि।
तहिना- मैथिली नाट्यसाहित्य मध्य रहि सुन्दरसंयोगक
महत्व दैक। सुन्दरसंयोगक रचना नाट्यसाहित्यक क्षेत्रमे-
एक प्रकारक नव प्रयोग दैक, एक प्रकारक क्रान्ति दैक।
जीवनका सुन्दरसंयोगक रचना कस कस नवयुगक सूत्रात-
कहलनि। मधुपिकि कुल्लोगन्मक रचनासँ बहुत दिन-

પ્રેરિતિ સંમિલિતભાષામે નાટ્યસાહિત્યક રચના રોચક આનિ
 રહ્ય દલ / સુદરસંયોગક રચનાસં પૂર્વજે નાટકક રચના મેલ અદિ
 સે સમય અનુવાદ દલ / નાટ્ય-સાહિત્યક ક્રિયાસ-પર હિતિપાત્ર
 કરવાતર વિદિત રોચક અદિ જે રકર ક્રિયાસ વડ પુરાન
 અદિ / નર-સમાજક ત્રં કચે કી-જે રેસ-સમાજકમે નાટકક
 પ્રચાર દલ તકર પ્રમાણ પ્રાચીનતમ ગ્રંથકમે મેરે અદિ /
 ગાત્રમે સંસ્કૃત-સાહિત્યમે નાટ્યસાહિત્યક અપ્રાચીન-
 કાલદિસે સુધીર્વ પદ્યપરા ચલિ આનિ રહ્ય અદિ / મારતમે
 જગતક આગમન મેલાતર અંગ્રેજી-શિક્ષાક પ્રચાર ઓ-
 પ્રચાર મેલ / અંગ્રેજી-સાહિત્યમે નાટ્યસાહિત્યક પ્રાચુર્ય દલ /
 અઃ અંગ્રેજી-નાટ્યસાહિત્યક અનુકરણ કડ કડ બંગલા આદિ
 ભાષામે ક્રિપય અનુદિત (Transliteration) નાટકક રચન /
 ૨) કરલ ગેલક ક્રિપય-મૌલિક નાટક સેહો લિખલ-ગેલ દલ /
 હકિ સમયક પ્રમાણ મેચિલ વિદ્યાન લોકન પર પડન સર્વચા-
 સમાવિક દલ / સુદરસંયોગક રચનાસં પૂર્વજેનાકિ
 પ્રેરિતિ કરલ અદિ, બંગલા, સંસ્કૃત ભાષાક ભુતો નાટકક
 અનુવાદ કરલ ગેલ દલ / પરંચ મૌલિક નાટ્યકૃતિક
 રચના નહિ મેલ દલ / કે એમ સ્વીય પદ્ધતિ જીવન-મુદ્ધનિ
 જે ઓ-સર્વપ્રથમ મૌલિક નાટકક સપમે, રંગમંચક-અપ્યુક્ત
 નાટકક રચના કાલનિ / સુદરસંયોગક મદત્વક મૂલકારણ
 મરૂ ચિક /

સુદરસંયોગ નાટકક રચના નવસર્પે ત્રં કરલ ગેલ
 અદિ પરંચ અગિનચ કલાક હિતિ ક્રિપય ત્રુટિ વર્તમાન અદિ /
 હકિ નાટ્યકૃતિમે પ્રાચીન પદ્યપરાક અનુકરણ અધિક આ-

नव- रूपक प्रयोग मोड़ करल गेल अदि। सूत्रधार,
 नट, नटी- आदिक प्रयोग प्राचीनताक कोणाक भिक।
 एकर- आदिमे- नान्दी- पाठ अदि। जहाँपरि
 नाटकक आकार- प्रकारक परन अदि से
 सर्वथा- छोट- अदि जकर- अभिनय मोड़ समयमे
 करल जा सकैत अदि। एहिमे- कोनहुँ^{एकर} विषयक
 सन्निवेश नहि करल गेल अदि जकर अभिनय
 नहि करल जा सकैत।

③

कृत्रिम गुण ओ कृत्रिम दोष संयुक्त
 एहि- नाटकक अपन विशिष्टता हईक। एहि- नाटकक
 रचनाक पर्याप्तहि मिथिलाभाषामे- मौलिक ओ-
 रंगमंचिय- नाटकक रचनाक परम्परा- नलिपल।
 एहि- नाटकक पर्याप्त भविष्य एवं वर्द्धि
 नाटककार लोकनि रंगमंचोपयोगी- नाटकक
 रचना करन प्रारम्भ करलनि। एहि- हिसाबे
 ई युगसंयोग- नामक नाटक नाटककार
 लोकनिक हेतुएं प्रेरणादायक सिद्ध भेल।
 अस्तु-।